किसान

किसान
तुम महान हो
भारत भाग्य विधाता हो
उन्नति और समृद्धि के
भव्य महल की नींव के पत्थर हो
कसमसाओ मत
शिखर डगमगा जायेगा
नींव की गहराई में ही
अपने बच्चों के लिए भी जगह बनाओ
महल की नींव पुख्ता होनी चाहिए
तुम्हें तो गर्व होना चाहिए
कि तुम्हारी वजह से ही शहरों की रौनक है
नेताओं की जवानी
अभिनेत्रियों की चमक
अभिनताओं की जवांमर्दी
गुण्डों का साहस ?
पुलिस की बहादुरी
खिलाड़ियों का जोश
विद्वानों के होश
तुम्हारी ही मेहनत का नतीजा हैं
तिरंगे के सारे रंगों की चमक
तुम्हारे ही दम पर है

क्या हुआ
जो तुम्हारा तन पूरी तरह ढक नहीं पाता
नहीं मिल पाती दो वक्त की रोटीयां
गंदा पानी पीने से भी
रोग प्रतिरोधकक्षमता बढ़ती है
कर्ज में डूबे दो-चार मर भी गये
तो क्या हुआ
आत्मा तो अमर है
तो फ़िर कहीं
किसी न किसी किसान के घर जनमेगी
अतः रूठने की जरूरत नहीं
अपनी नज़र हल-बैल
हल के फाल पर ही रक्खो
यूं भी हम तुम्हें कुछ कम नहीं देते
बिजली न सही
पर टीवी, फ्रीज, मोबाईल तो है
खुशबूदार साबुन
पौष्टिक बिस्किट, चॉकलेट जैम
ठंडा, गरम, जीन्स, जूते, बाइक के साथ
नयी-नयी हिरोईनें, आकर्षक अभिनेता
खूबसूरत खिलाड़ी, हाईटेक नेता
क्या नहीं है तुम्हारे पास
खुद को पहचानो
अपनी ताकत को तौलो
और वहीं नींव में पड़े रहो
कसमसाओ मत
शिखर डगमगा जाएगा।

-हूबनाथ

(लोअर परेल संकलन से साभार)

सी बी आई को प्रधानमंत्री चलायेगा या गोश्त व्यापारी

पेज एक का शेष

सिंह और कुरैशी तो उसका नाम आगे बढा ही रहे थे, लालू ने भी सोनिया गांधी से उसकी पुरज़ोर सिफ़ारिश की। जाहिर है इन हालात में डायरेक्टर बनने के बाद सिन्हा ने सी बी आई को 10 जनपथ के इशारों पर चलाया और मोइन के साथ मिल कर माल भी खूब खींचा।

वकील प्रशान्त भूषण द्वारा सुप्रीम कोर्ट में नंगा किये जाने से पहले सिन्हा ने राजनीतिक हवा के मुताविक बखूबी रंग बदले। कांग्रेस के राज में रेल रिश्वत-कांड में तत्कालीन रेल मन्त्री पवन बंसल को क्लीन चिट दे दी। बाद में जब भाजपा का सूरज चढने लगा तो उसे जल चढाते हुए अमित शाह को सोहराबुद्धीन फ़र्जी मुठभेड़ मामले से बड़ी कर दिया। कहते हैं यह सौदा आज के वित्त मन्त्री अरुण जेटली की मार्फ़त सम्पन्न हुआ था। इसी 'एहसान' के चलते मोदी सरकार ने रंजीत सिन्हा को आराम से रिटायर होने दिया।

यहां तक कि सर्वोच्च न्यायालय भी कड़वी टिप्पणियां करने से आगे नहीं बढा। रंजीत सिन्हा के सरकारी आवास का विजिटर रजिस्टर इस बात की गवाही देता है कि तमाम बड़े घोटालों के अपराधी एवं उनके एजेंट सिन्हा से घर पर मिलते रहे हैं। यहां तक कि दलाल मोइन कुरैशी की भी 72 प्रविष्टियां इस रजिस्टर में मिली हैं। स्वयं मुख्य न्यायाधीश दत्तू ने टिप्पणी की कि यदि वे सिन्हा का चिट्ठा खोलेंगे तो सी बी आई की साख को धक्का लगेगा। सवाल है कि जब एक अपराध की सूचना न्यायालय को मिली तो मुकदमा न दर्ज करने का कोई भी तर्क बेमानी हो जाता है। कहा जा रहा है कि अमित शाह के मामले में 'एहसानमंद' मोदी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के रवैये को नर्म करा दिया।

अब जिस तरह बिना पारदर्शी प्रक्रिया अपनाये, अनिल सिन्हा को बीसियों वरिष्ठों की अनदेखी कर डायरेक्टर सी बी आई बनाया गया है, लगता नहीं कि इस जांच एजेंसी की कार्यपद्धति में कोई सुधार आ सकता है। अनिल सिन्हा, जो सी बी आई में विशेष निर्देशक के पद पर थे, को मोइन कुरैशी से जोड़ कर देखा जा रहा है। हालांकि अनिल सिन्हा की नियुक्ति मोदी के चहेते मन्त्री रविशंकर प्रसाद की कृपा से हुई है। सिन्हा और प्रसाद दोनों कायस्थ बिरादरी से होने के अलावा जमाती भी रहे हैं। पर मोइन जैसा शातिर दलाल सिन्हा से पुरानी 'दोस्ती' और मज़बूत न करे, यह संभव नहीं। **लब्बो-लुआब कि सी बी आई पुराने ढर्रे पर ही चलती रहेगी।**

भारत और अमेरिका

पिछले दिनों भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा बेहद फूहड़ ढंग से भारतीय मीडिया में चर्चा का विषय बनी। हालांकि इसके लिये मीडिया से ज़्यादा स्वयं नरेन्द्र मोदी के तौर-तरीके और भाषा-शैली जिम्मेदार है।

नरेन्द्र मोदी का हालिया वर्षों का राजनैतिक उत्थान भारतीय किस्म का नहीं खालिस अमेरिका किस्म का है। एकाधिकारी पूंजी के द्वारा अपने घृणित हितों के लिए पूर्ण धूर्त ढंग से की गयी योजनाबद्धता और प्रचार। इस पूंजी के तौर-तरीकों का विकास वैसे तो अमेरिका में पिछली सदी के शुरू से होने लगा था। परन्तु भारत में यह एकदम हालिया परिघटना है और इसका जन्म और विकास नरेन्द्र मोदी के राजनैतिक उत्थान से एकदम गहराई से जुड़ा हुआ है।

यह आज एकदम जगजाहिर बात है कि गुजरात के पिछले विधानसभा चुनाव और हाल के आम चुनाव में नरेन्द्र मोदी के प्रचार को एक अमेरिकी कम्पनी के द्वारा संचालित किया गया। नरेन्द्र मोदी के पोशाक से लेकर उनके सारे लटकों-झटकों की पटकथा के पीछे एक ऐसी कम्पनी रही है जिसका सारा करोबार ही यही है। इस बहुराष्ट्रीय कम्पनी के साथ दूसरी एक विशाल कम्पनी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था। इस दूसरी कम्पनी ने अपना पूंजी निवेश एक हिन्दू राष्ट्र के लिए किया हुआ है।

नरेन्द्र मोदी के चुनाव को जिस ढंग से प्रायोजित व नियोजित किया था ठीक उसी ढंग से उनकी अमेरिकी यात्रा की हर चीज़ प्रायोजित-नियोजित और 'बड़े परिणाम' हासिल करने के लक्ष्य से संचालित थी। मेडिसन स्क्वायर का पूरा ड्रामा इतना ज़्यादा प्रायोजित-नियोजित था कि मानो वह किसी देश के प्रधानमंत्री की सभा न होकर किसी रॉकस्टार का जलसा हो। उन्मादी भीड़ जिस ढंग से उत्तेजक डांस पर अपना आपा खो बैठती है वैसी ही स्थिति मोदी के जुमलों पर अमेरिका में बसे इन अमीर भारतीयों की थी।

नरेन्द्र मोदी और साथ ही उनके प्रशंसकों की यह कुण्ठा रही है कि उन्हें अमेरिका में लम्बे समय तक नहीं आने दिया गया है। अमेरिकी साम्राज्यवादी जो आकण्ठ मानव-विरोधी अपराधों में लिप्त रहे हैं वे मोदी को अमेरिका नहीं आने दे रहे थे। 2002 के गुजरात नरसंहार के आरोपी को ऐसे लोग रोक रहे थे जिनके द्वारा अब तक अनगिनत नरसंहार किये जा चुके हैं। रोज ही इराक, अफगानिस्तान, सीरिया, फिलीस्तीन में वे निर्दोष लोग़ों की हत्या कर रहे हैं। मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही अमेरिका के कानूनों से उन्हें वैसे ही संरक्षण प्राप्त हो गया जैसे जार्ज बुश, क्लिंटन व ओबामा को प्राप्त है। रोज नरसंहार आयोजित करने वालों ने गुजरात के नरसंहार के आरोपी को अभयदान प्रदान कर दिया। वैसे भी दुनिया के तमाम तानाशाह उसके संरक्षण में पले-बढ़े हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिकी यात्रा का मकसद जितना बाहरी था उससे अधिक आंतरिक था। अन्यथा मोदी की यात्रा का इतना लाइव प्रसारण न हुआ होता। मोदी जी जानते थे कि वे संयुक्त राष्ट्र संघ में जो सम्बोधन कर रहे हैं वह वहां के लिए नहीं बल्कि हिंदोस्तां में अपनी छवि चमकाने के लिए है। असल में मोदी अमेरिका में वह उपलब्धि हासिल नहीं कर सके जो पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अमेरिका-भारत परमाणु समझौते के बाद अमेरिका में हासिल की थी। उन्होंने अमेरिकी संसद के संयुक्त अधिवेशन को सम्बोधित किया था। हां! एक अमेरिकी अख़बार की बेवसाइट पर छपे ओबामा-मोदी के संयुक्त लेख को भारत में बड़ी उपलब्धि के रूप में प्रचारित किया गया। आजकल ऐसे लेखों का चलन आम हो गया है। अमेरिका और भारत के संबंधों में नई आर्थिक नीतियों के अपनाये जाने के बाद से 'प्रगाढता' आयी है। और इसका जो भी अर्थ भारतीय मीडिया में लगाया जाता हो सही शब्दों में इसका अर्थ है कि अमेरिकी साम्राज्यवाद की भारत में जकड़बंदी पहले से कई गुना बढ़ गयी है। सम्पूर्ण भारतीय व्यवस्था आज अमेरिकी साम्राज्यवाद के हितों को अपने हितों के रूप में खुले-छिपे तौर पर स्थापित करने की आदी हो चुकी है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, पेप्सी, कोक जैसी सैंकड़ों अमेरिकी कम्पनियां भारतीय समाज में अंदर तक पैठ चुकी हैं। भारतीय सेना के अमेरिकी सेना के साथ आये दिन होने वाले सैन्य अभ्यास के जरिये भारत की सेना को अमेरिकी सेना के तौर-तरीकों के अनुरूप ढाला जा रहा है। अमेरिकी सेना आज भारत के सैन्य ठिकानों, हथियारों, क्षमता से गहराई रंगभेद का शिकार होना पड़ता हो। भारवर्ग जितना पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन जैसे पड़ौसी देशों के ख़िलाफ़ विष घोलता है अमेरिका की बात आने पर प्रशंसा के भाव में डूब जाता है। भले ही भारत के रक्षामंत्री की जामा-तलाशी वहां के अदने से अधिकारी ले लें।

भारतीय पूंजीवादी शासकों की ऐसी ही नियति है कि वे अब साम्राज्यवाद के सामने वह ढंग व तेवर अपना ही नहीं सकते जो एक आत्मनिर्भर, स्वाभिमान देश को अपनाने चाहिये। ये तो निवेश, तकनीक, पूंजी की जरूरत के लिए 'मेक इन इण्डिया' जैसे जुमले ही उछाल सकते हैं। ये अपने दम पर अपने देश का विकास करने का माद्दा रख ही नहीं सकते क्योंकि इनका जितना ज्यादा जुड़ाव अमेरिका, जापान से है उससे कहीं ज़्यादा अलगाव भारत के मज़दूरों-किसानों से है। ये अपने देश की प्राकृतिक संपदा, बाजार और श्रम शक्ति की नीलामी ही कभी जापान, कभी अमेरिका और कभी जर्मनी में कर सकते हैं। इनके वश का नहीं है कि ये एक आत्मनिर्भर, स्वतंत्र, 'श्रेष्ठ' भारत का निर्माण कर सकें। यह सारा काम भारत के मज़दूरों का है वही कर सकता है। अपनी बारी आने पर वह ऐसा करेगा भी। परन्तु तब भारत में पूंजीवाद नहीं समाजवाद होगा। पूंजी का नहीं मज़दूरों का राज होगा। **-नागरिक**

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

फरीदाबाद में अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207